

INTERNATIONAL CONFERENCE ON

“ENVIRONMENT, AGRICULTURE & HUMAN WELFARE: AN OVERVIEW OF
SUSTAINABLE GOALS OF FUTURE”

26TH November, 2023

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की महत्वपूर्ण भूमिका-एक अध्ययन

जगदीश बालकृष्ण लोहकरे, शोधकर्ता, एन. एच. कॉलेज, ब्रम्हपुरी

सारांश

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह (Self-Help Groups-SHGs) एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभर रहे हैं। स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचत, ऋण, वित्तीय प्रबंधन, कौशल विकास तथा सामूहिक उद्यमिता के अवसर प्रदान करके उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाओं की आय, बचत, रोजगार, स्वरोजगार, वित्तीय निर्णय लेने की क्षमता और परिवार में आर्थिक भागीदारी में किस प्रकार परिवर्तन आता है। SHGs के माध्यम से महिलाएँ लघु एवं कुटीर उद्योग, कृषि आधारित गतिविधियों, हस्तशिल्प, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण तथा अन्य आय-सृजन गतिविधियों में भाग लेकर आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। इसके अतिरिक्त, समूह आधारित गतिविधियाँ महिलाओं में नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक जागरूकता को भी बढ़ावा देती हैं। हालांकि, वित्तीय संसाधनों की सीमित उपलब्धता, बाजार तक पहुँच, प्रशिक्षण की कमी, डिजिटल साक्षरता और सामाजिक बाधाएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह केवल आर्थिक सहायता का माध्यम नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण साधन भी हैं। प्रभावी प्रशिक्षण, डिजिटल वित्तीय समावेशन और बेहतर बाजार संपर्क SHGs की प्रभावशीलता को और बढ़ा सकते हैं।

मुख्य शब्द: ग्रामीण महिलाएँ, स्वयं सहायता समूह, आर्थिक सशक्तिकरण, महिला उद्यमिता, वित्तीय समावेशन, स्वरोजगार, ग्रामीण विकास, कौशल विकास, महिला आत्मनिर्भरता, सामाजिक सशक्तिकरण।